TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4404**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

= सुघना करणहारस्वामी वाउरू वर्द्धमान रागद्वेषना = वीनती अवधारिसांभलि = अम्हारइ उनिविनाहवंसमउदेस्वामी = आगातिडरव =
जीवणहार =

॥र्दु॥ सुखकरस्वामीवीरजिण वीनतमीअवधारि उम्हदंसणविणहवंसमउ वउगाहइ

भवसंसार = १ = सर्वसंसारीकजीवतणा = पाठ आलाशा छइ तेह णचउवीस = तेहमांएकेकइ कहवुं = हवं स्वामी बोलबवीस२४

दसंसारि १ सविसंसारीजीवना दंडक छइ चउवीस तिहिएकेकइ वीनवउं कुंअरू द्वारब

= पहिलोनारकीनो दंडकसगावतहकदो = १ = भवनपतीना दंडक दस ७०पवे११ कवा थावरनाप दंडकएवा६ विगलेंद्रीनाइएव१९ तिरियंच

वीस २ पहिलो दंडक नारकी १ भवनपतीदसजाणि ११ पंचयथावरपविगलतियर तिरि

अनइ मनुष्यतेविहनादंडक व्यंतरनउ दंडक १९वे२२ योतिषी नवदंडक २१वे२३ विमानिक पदंडक नाममाइह कह्या = ॥ हि वइ तिहां बावी
२०वेदंडक २१ वषाण्या॥= तेहनो दंडक १ एवदंडक २४ =

रडलिवषाणि ३ पंचिंदीवणजोइसीवेमाणियरुवदीस पदंडकनामइकह्या द्विवतिद्वा २

स२घमकद्विसकउं॥४= अवारिकसरीर१ वैक्रियसरीर२ आहारकसरीर३ तेजससरीर४ कार्मणसरीर५ = प णंचे सरीरजाणिवा आवगाहना सरीरनो मानरुहार

द्वारबवीस ४ उरालियवेउविया आहारक तेजसकर्म ५ पणसरीर अवगाहना देहमा

= कांचपएवएमर्कटस्पदा संघयणतिस्पर्द्धाकिनी निचय पहिलोसंघयणवज्र । बीजेसंघयणिवज्रषीलीनहीर त्रीजइसंघ चउथइसंघयणि
छ चोपांमी =५= लीरिषभकदनाणरानाराचउ नयमर्कटबंध कस्किसा= पणिइ षीली नहीपाटो पिणनहीं= कदिम मर्कटबंध

नाराच ५ हाल पहिलइ वज्जरिसह करिकही बीजइ वज्ज त्रीयवेनही अरिधनाराय

जाइ एकदिसिनही= पंचमसंघयणि एकइ मर्कटबंध नही बेहुसंघयणि इम पदबदसंघयणि जाणिवा हिव छ संघसे पहिलोसंस्थानसमचउरिज्ञं सांस
मा छार्मबदमा जाणिवा एव छार तीन थया =६= स्थानक कहै छै संस्थान तेसुं आकारस्वरूप= तेहिन्हि थ चउसरीषो जिम वदन्क्रम

मा अछ पदजुड पंचम बड कीलिय छेवठ ६ वदसंघयणछ संठाण समचउरंसा निग्गो

सुंदरतलइ अरु ताडउ तलस्सुंदरकपरमालोमध वामणसे के बोदउ छठउ संस्थानजनकनक आलिपालहि दूबलीकलइ दीस कोधरीसमान अतिपानमा
दरते सम उनाण सरीरक लक्षणकहउ सरीर जाणिवउ= तउ अणाङ्क कहता वुरो जाणिवो = ७= यापरव चना अनइ लोभ

दपमाण सादि अनइ वामणयं खुज्ज हुंड कंमकह वछउ जाणि अणाह ७ कोधमानमायाने

कहता पआरेकसाय कहतासमारनो श्रयकदलोलाल हिवइ ४ संज्ञा कहइ छइ आहारसंज्ञा आहा भयसंज्ञा बीवक पणउ मैथुनसंज्ञा वेदोदय वि
वाछा संसारवधावै तेजी वनै होलखप जावइ पव पक्षः र नउ अतिलाभ वाछा जीवउ परजावइ = वयवांछा परिग्रह ग्रहण बुधि एह चारि संज्ञा जीवनै हो

लोभ चारि कसायउ पावइ होइ आहारादिक संज्ञा चारि भयमेहुणपरिग्गहसु चिचा

एवचारह लेस्या जीवनइ हे षम्ह्स कालीनीली कपोत तेजसरक्तवर्ण पद्मलेस्या पीतवर्ण शुक्ल क इंद्रिय५ स्पर्शनिंद्री श्रवा१ रसनजिह्वार
ध्राण= लेस्या सोला यान्हइवर्णइ जाणिवी= कालीएजो उ जाणउ एवं ७ हार=

हि ८ लेस्या किन्हनील काउ य तेउ पउम सुक्कि लाउ होइ इंद्रियफरिसरसणाने 2

घाणकइ नयननेंद्र४ श्रवणकानइ५ एपांचइंद्री जो ण समुद्घातकरतां सरीरमांहिथी प्रदेसकाढीवे तरवेला प्रदेशआकर्षी थइ वैक्रिय
संनाकइ कहइ एकसर्व मिलीनइ आठघारबया ॥ ९ ॥ वेदनाउपनापरदेसआकर्षी येकषायऊपनावर सरीरकरतां प्रदेशआकामइ आहार
दसनीकलइ =

घाणं नयणं श्रवणं इय साय इंद्रिया ७ समुद्घात वेयणा कसाय मरण वेउव्वि अ आहारक

सरीरक तेजुलेस्यामूकइ तिवारइ प्रदेशकाढइ ६ व्यब ममसहितं चेष्टा तिसनीय अमनविनाजेहो मनोबल नइ करीसहित ते सन्नी मनोबलरहि
रतां अदे ए केवलीसमुद्घात करइ तिवारइ प्रदेशा व ते असन्नीथइ कहीजइ ~ = १० = न ते असन्नी जाणिजो =
काकादइ जीवनाकर्मकाढइ सरीर सी ७ व ४ टार =

दीहाइ तेअग केवल गिणि संति सन्नि असन्नी इय विधात १० मणवयण सहित दितय पज्जत्ति

= स्त्रीवेद१ पुरुषवेद२ नपुंसकवेद एप वेद आहारनी पर्याप्ति१ सरीरनी पर्याप्ति२ इंद्रीनी पर्याप्ति साषापर्याप्ति मूक इज इजे पुद्गलभाषाप्रणे पर दृष्टवउ
३ तिइ सासोस्वासपर्याप्ति ४ भाषामनपर्याप्ति ६ ~ सामर्थवे मनपणे पुद्गल परणवे ते मनपर्याप्ति ~ ११ = तेह दृष्टि

थी नर नपुंएवेद वखाणि अंगणत णो दि आणानइ भाष साषामणपज्जत्ति षमाण ११ दिट्ठि

समवदृष्टवंत १ कांको दृष्टवंत २ कांईसमत कांईषांकं ए मिश्रित दृष्टावीत दृष्टवंतनेत्रकरीदृष्टवंत चउरिंद्रीनइ जाणिवउ अवधिदर्शनिइ दृष्टवउ
रागवेदइ अकासमा = आंखें दीमलपचत्रनइ नेत्रविना उपार = ३ केवलदर्शनिइ दृष्टवउ

समदिष्ठी मिस्र तिमिथ्यासइ श्रीउतादीस दंसण दस्क अरक्कचविधारि उदी केवलमि

१ च्यारिइ जाणिवा ज्ञानेस्की मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान२ अवधिज्ञान ए पांचे सदैकरी समकितानासमकितनिरमलो मतिअज्ञान मनविपरीत जाणवो १
जाणिवो = १२ = मनःपर्यवज्ञान केवलज्ञान एव ५ कह्या हो इ श्रुतज्ञानने विपरीत ते अज्ञान विरी

तिइ मच्चारि १२ मइसुय ओही केवल पंचनाण समकित निरमला मइसुय ओही सणउ ... २

= मण४.

अवधिसिनी ए अज्ञानतीनमिथ्यात्वनीसंगतिहोइ = १३ = मननो१ वचनो२ कायानो३ जुजवो ते योग= ज्ञान५ अज्ञान३ दर्शन४ एसर्व मिली १२ उपयोग
विपरीतमा
ति ३ =

विभंगा एअ ज्ञान मिथ्यामतिसंगा १३ मणवयणकाय त्रिविधयोग नाणअनाणदंसणउपयोग

पोढ सी निश्चली बारसर्वमिलीने जाणिवा = एवंबारक ह्याके वलायइ ह्व १४ हेयउ१ ऊंच२ चरव दिसि३ दक्षिणदिसि ४ पश्चिमपउतर१
उइदि६

एवं सोलि बलि बारइमिली एवं बारकह्या कवली १४ अधकरध १२ वदक्षिण पश्चिमउत्तर

दिसा ६ सब्जीयनइ ६ बइ आहार तिहां विशेषयुक्तानलीविचारजाणियत्र ६ वं १५ त्रयमानध नारकी ३ तिर्य

छइ दिसतणा सरू अडीवन इक इ आहार तिहां विशेषइ बलीयविचार १५ नारय

र्थंच न ३ ३ मनुष्यनउर अमर कीर तिर्यंच र मनुष्य ३ देवधनउं संघातिइ समकालिइ प्रदेशालेइं पविलविना अणीमांडो अत्रकमिस
देवनउ ४ एवं २० आठेकसिद्ध इ ढ एवं १८ रुसमोहिअर कविमर० देश कदाकृहिंलेई यस्त

तिरिनरसुरउपपात ९ हकुम्यारि आकविधात समोहियासमकालि प्रदेसि असमोहिआ

विजाते ढुनइ असमोजि चवंन४ नारकी१ तिर्यंच२ मनुष्य३ देवताइ४ सिद्धिमोक्षसहित गति५ नरक१ तिर्यंच२ नर३ सिद्धिविना आगति
तेवा एवं २२ विकलगति ५ ईनामिइं च्यारिवतुवम्म देवता ४ मा क्रियगतिकहियइ एवं २३

ते अणि निवेसि १६ चवण च्यारि विक्त गति नमनामि सिद्धि पहित ता ति पचवखामि तेह दंड

3

रकादि सर्वे दंडक होते। गतिआगति नव्रइ तिमरि विचार आगति गत्ये २४ श्रवणा चक्षु२ घ्राण३ रसना४ स्पर्श पंइंद्रिय५ सासोस्वास१
मनोबल१ वचनबल२ कायबल३ आउ४

गइआगति ढुइ बार गति आगति दंडकि एरिंद्र विचारि १६ इंद्रिय पजत्ति बल आउ सासस्स

दस१० प्राण नउ समूह। सर्वमिलीने पर्यायार्थ हिवे जोग
मन नाथ वचन नाथ आगतीकेही १८ सत्य मनो योग१ असत्य मनो योग२ मिश्र मनो योग३ व्यवहार मनो

पाणा सगुदाउ सव्व यदस लद्धि पनरयोग चारि सच्चाइ काय योग ७ सव्वास सम्मिश्रादि

योग४ वचन४ उदारिक काय योग१ उदारिक मिश्र काय योग२ वैक्रिय काय योग३ वैक्रिय मिश्र काय योग४ आहार काय योग५ आहारक मिश्र काय योग६ त्रिहिं चिमण कार्मण काय योग७ इम १५ आठसर्वदंडक ह्याते सर्व मिलीने योग

वसार उरालिय वेउव्वि आहार तिमि मिश्र कम्मणु तनु योग सातमिलि इम पनरह योग १८

दंडक कारइंहार२६द्वार। दंडक२ अतिकठियाली बांधवड। सब्बी आगलि आपत्ति दःख अनंद दक दत्त उद्धार इत्यादि

पसार तत्थ वावीस दंडकि दंडकहं एइ मागं से चउआगाइ विउइ संख परकदउ समणुपमा ३

इंजि मरूत्त सलन मार गल्हइ ढाल११२ तेजस शरीर१ कार्मण शरीर२ थिरि सरीर सर्वजीवनइ हंसमां वैक्रियसहित
नजाणि॥ सरीर ३

भजिम मारग जहउं १७ ढाल२ तेजस कम्मण वेय सरीर सवि जीव समाणउं वेक्रिय सउ

तेजस१ कार्मण२ वैक्रिय३ नारकीनइ अनइ देव
नय तलनइ यइ आरार आणिवा॥ थावर पंच अनइ विकलेंद्री ४ एव्यादइ नइं तेजस१ कार्मण२ वायुकायनइ
सहित उदारिक पत्रि एणे शरीर कहइ॥ ४ सरीर कहइ।

तसु तिहि नरक सव्वभिपसाहाउ थावर विकलेंदी विकाय उरालिय सदिय वाउका

नव रंग तिजो न तिहां वेक्रिय अधिक करियइ। तेकेहां संमूर्छिम तिर्यच पंचेंद्रीनइ शरीर ३ तेकेहां तेजस१ कार्मण२ उदा
तेजस कार्मण उदारक३ वैक्रिय४ अधिक॥ रिक ३ एत्रि किणि॥

य चउ काय नवरि ति चिउवेउव्वियअदिय २० संमुछिम पंचेंदी तिरिय ति सरीर उदारिय ग

गर्भज तिर्यच पंचेंद्रीनइ सरीर ४ तेकेहां तेजस१ कार्मण२ मनुष्यनइ सरीर ५ एकेक समुचइ पदिइं वाणक हतां व्यंत
उदारिक ३ वैक्रिय एवं धारि वि उदारिक १ वैक्रिय२ आहारक३ तेजस४ कार्मण ५॥

तेउ तिरि पंचदि धारि तिह विक्रिय धारि य मा नवपुन्न वणाड विमाणी कपपइ वय +पंचसरीर+

रज्योति षी विमानिका कल्पदेवलोक१ नवग्रैवेयक
अनुत्तर विमान ५ एसर्व देवनइ नारकीनी शरीर ३ तेजस१ कार्मण२ वैक्रिय३ एजाणिवा॥ २१
हिवे अवगाहना नाहना शरीर नउ उत्कृष्ट कहिये एपहिलइ नरकि धनुष
धनुष ७॥

क अणुत्तर नारक जिम जाणी २१ हिव अवगाहनं साहारक हिसु नरक इंधणु सय

हाथ३ अंगुल६ एजघन्य उत्तर धारणी कशरीर वलावन उ उत्कृष्ट धनुष ५०० ते हलीनरवेली धनुषकउत्तर धारणी उत्तर वै
जाणिवा॥ क्रिय प्रथमनरकि धनुष १५ हाथ

तिकर व अंगुल छउ जहन्न सव धारणि कुस उक्क सीसत पं चधणुदत्त रवेकिं य स्स 4

सा लघ नरह हाथ अर्द्ध एज घन्य नारकी नउ सरीर॥ २२ उत्कृष्ट [illegible] तेरह लीनरा २थ बाईंधनुष सइ अउ ऊरइ मिति इआवाइनानारकी॥

ग [illegible] अउ सदवीय हइ अंगालभत्तलक २३ उकडीस फ [illegible] अद्ध रङ अ [illegible]

शथम ज्यातिषवासव धारणी सरीरइ अंगुलनउ असंख्यातमउ भाग॥ ऊतरवैक्रियसरीरनउ। प्रारंभियइ अंगुलनउ संख्यातमउ भाग॥ सवनपतिनउ सरीर अंगुलनउ असंख्यातमउ भा

इगं [illegible] अंगुल असंखसंखता [illegible] दिहरण [illegible]

गलवधारणीय जघन्या॥ उत्कृष्ट सातहाथ सवनपतिनउ शरीर २४ वैक्रिय सरीर जघन्य अंगुलनउ संख्यात मउ भाग

नि [illegible] डवना उक्कोसाकरसत्रा [illegible] नि [illegible] २५ अंगुलतइ संखि [illegible]

आरंभकरिवानि इकालिय कजाव यो यन॥ वैक्रिय शरीर उत्कृष्टउ हाथ एहवउं जाणवउं केवली॥ उत्कृष्ट अस्त्रका केवलीनाउ डिगोचरी॥ पृथिवीपाणी अग्नि वायु एतलानउ देह

डीयाणलरस [illegible] उकडि [illegible] दिय [illegible] २ [illegible] ४

सरीर एक अंगुलनउ॥ असंख्यातमउ भाग उत्कृष्टउ अनइ जघन्य जाणिवउं कांई अधिकउ मह॥ २४ वनस्पतीनउ [illegible] तनु शरीर मानजघन्यपृथिवी॥

अंगुलकेरउ अ [illegible] कोस [illegible] अधिकेरउ २४ वनस्पतीनउ

पाणी। अग्नि। वाउ सरिखउ अंगुलनउ तउ उत्कृष्टउ दिय कहिस्यइ। जोजन सहस्र एक साधिक ऊउरे जाणिवउं। बेंदी। तेंदी चउरिंद्रनउ असंख्यातमउ भाग॥

मानउ हुल [illegible] सरिस [illegible] अधिक इकडोयण सहस्स बितिय

चउरिंद्री। एहनउ जघन्य देहसरीर पृथिवी सरिखउं अंगुलनउ असंख्यातमउ भाग॥ बेंद्रीनउ सरीर योजन बार २ बार मउ। तेंद्रीनउ सरीर गाउ त्रि ॥ चउरिंद्रीनउ सरीर योजन एक॥ संमूर्छिमपंचेंद्रीय॥

रिंदिय [illegible] माणउ [illegible] ३५ सम

तिर्यंच। जलचर। थलचर। नइ। खेचर॥ ऊरपरि भुजपरि पंचेंद्रनउ सरीरनउ मान जघन्य थर पृथिवी सरिखउ विचार अंगुलनउ असंख्यातमउ भाग॥

मिपथं चंदि तिरियइ [illegible] वहारी [illegible] खयर [illegible] ऊदज्ञ [illegible] रिसरिसवि [illegible] उत

उत्कृष्टउ तउ संमूर्छिमतिर्यंचनउ योजन सहस्र जलचरनउ २ धनुचरनउ गाउ पइ तउ कहइ तानवलगा ९ खेचरनउ धनुष पृथक्त्व परियो जन ९ भुज परिसर्पनउ धनुष पृथक्त्व लगा। करिहकारी अद्भुत कमि इ अनउ कमिइं। थलिजलचर। प्रा मोमिइ॥

[illegible] डोयण [illegible] गाउ [illegible] डोयण [illegible] करे [illegible] जलचरजोय

गर्भज तिर्यंचनउ सरीर मान जघन्य संमूर्छिम समान जाणिवउं॥ पच्छिलउ जलचरनउ योजन सहस्र एक वाजउ थलचरनउ तिहन ३ मानगाऊ इह सरीर॥

ण। ३६ [illegible] तिरि संमुच्छिम [illegible] पच्छि [illegible] डोयण सहस वीयगाउ

असंखेजचरतेइनउसरीरमउबपदतम उरियचउधउउरमरिसर्धनस कोचमउज्जयरिसर्वातरनकसरीरमानगाऊ
·बजणा ए। रारमानयोजनसहस्त्र१एक॥ मऊत ए लगीऊदयपरमरहस्यजाया
॥
इगार जोअणइ सहस्स ऊ पणु वत्त रियिड कोअणसय मा अगाऊ तलपरम एआणर ॥
नरमनुष्यनतजघन्यतिर्यंचनीपरिइं।अंगुलनतअसंखा। व्यंतरअनइज्योतिधीतोहनइसरीरमांनसवनयतीन
तमतसागा॥ तकृष्ट तगाऊ १ देह। वरिइंजघन्यअंगुलननअसंख्यातमउलगा।हाथ७कृष्टव
इस ५७ नरऊ घनतिरिदिमयसप्तविणिगाउवड्ढ वंतरजोइस ...णजूम अवणादेणय
कल्पविमानवासीसुरनतजघन्यदेहपहिलाभागसरिखतमे सोधर्मईशानदेवलोकिदेहहाथ७सननकुमा
लाअगुलनतअसंख्यातमउभागयलाभि॥ रामा हेंद्र.पनि ऊहाथ६।
इ ऊणय दो सुरकप्पे हिं हाप सुरस टकहाय किं ... इकारससहिजिऊ उरिमनदसा
ब्रह्म१लांतक्रियिलिक्ंहाथ५शुक्रसहस्रार२यविक्ंहाथ४। आनत१प्राणत२ एसवधारदेवयदेहनउमांनकधो
आरणअच्युतदेवपचिकेंदे व लो किदेहमांनहाथ३ हिवंउत्तरविक्रियसरीरकहइछइ॥
अ ... हि ... णुत्तरविजणसउतितिसिरिकंउवरिमउमिय ... ि देहमानउत्तर
जघन्यअंगुलनउसंख्यातमउमाग। उत्कृष्टउआणिवउयोजनना अघन्यउल्यजअंगु उत्कृष्टउतउहाथ
यएक सरीर। लनउअसंख्यातमउभाग
वेउव्विय देहं पुण अंगुलसंखंसमारंभे नरकजोयणादेव उपत्तजइउकेतालिकराणे

ग्रैवेयकअन उत्तरवैक्रियसरीरग्रैवेयकिनथीइस्या॥ अनुत्तरविमाननइजघन्य उतकृष्टमनउहाथ१उत्तरवैक्रियसरीर
रविथइ॥ अंगुलनउअसंख्यातमउ
भाग॥
वेयकदेव अणु उत्तरवैकियनछिइहां विमाणिअणहार संघयण...संठाण
तउनिरोमस्थी॥ एवोइसूकाहिइंसरीरनउमाननकहउहैं मकरसइगाथा। हिवंत्रीजेछिसंघयणनउद्वारसाथि वानीवा
दिक्रियउत्तरमहियणतसुमाणकदूरदंफकवत्वारा छिवइसीडइसंघयणहारसाथि
गाउइ। हाजयउजाणिवा॥ ३ नारकीसेबणपतीररव्यंतर१२ज्योतिषी१यैमानिक२४एवंघरइदंडकिसंघयणनथाणा
नउइ॥
वइऊगरस अउ डालइ नारकीतनतणजोयाअणणियाअं हक वऊवसंघयणनवइ
थावर५विकलेंद्रीउसंमूर्छिमनउष्यपंचेंद्रीन। अनइतिर्यंचपर्दसदनइत्रेवक्रसंयमनाऊई।सिंधी गर्भिजतिर्यं
तइंकहयउ जइ॥
णाण थावर विकलउसंमुछिमणतिदिया तिरियवेवइसंघयणछक्कविद्धिया उरी गम्भ
चिअनउमनुष्यनइंसंघयणाइजाणिवाएवं हिवंसंस्थान्उहहियइनइविसइविपरीभवोआणि नारकी२विकलेंद्री
हार२ऊभा॥ योद्र६ ३॥
तिरियमणय संघयणाइ ... णदा छिवइन्नसंठाणदियउल्सउइ अणिमा नारकीतिनि

संमूर्छिममनुष्य। अनइं तिर्यंचपंचेंद्रियपणि हुंडकसंस्थानकहइ॥ चंद्रमाअनइं मसूरश्मन्यपटविवान पालीनत्तपंघोर अर्धसंस्थान॥

थविरकअसहडिआ तिरि पं इंदीया [...] संठिआ इय चंदप्पमसूरपुढवीकंदी डिंगा

उतेसंस्थान अपकायपाणीनउ जा अग्निकायसूईनउ सूआनइ ... लोकरामूंकीइयइ कायनइ पताका वणासतस्पती लीथुद्र॥ वउसंस्थान। एह धीनमाटीछी॥ धजानउसंस्थान॥

[...]गंद्[...]का [...] ठाणमाणी [...] गिन्हचंपिलावौ [...]माकारया संघयणु [...]संवितिय

नउसंस्थानघणेप्रका रेजा (ली)थउ॥ नवनपतिर० व्यंतरश्रज्योतिषीश्वैमानिकश्एतेरदं डकनादेवतानइंसंस्थानपदिलउसमचउरंसहोइ॥ गर्भजतिर्यंचअनइंमनुष्यनइं छ इसंस्थानकहइतेजाणीवा।

दणावउज्झरिणाहा उत्र तेरदंडकउ [...] असंठाणिहा गब्भतिरि नरछदासंठि आ जा

नारकी घउघउचववासदं म कलेसपाकरवाइपाछ। च्यारिकषाय।अनइंच्यारिसंज्ञा आगमनइविषइ पंचा।घवा एनलइच्यारि॥ रनउविरउकदाउ॥

[...] ४ नारकी [...] दउवीसदंडकलाणा उ [...]कसाउ वउसन्नभ्रगमसुणा

७सातमउनारहिविउकहिस्यइलेस्यानो॥ दंडकश्० अनइं च्यारिएतलइश्ध अश्आश्कहिस्यइ। नारकीविकलें द्रीश॥

इ५ सउगतुघार विकलदिसुलेस्यातणो दंडकवीसनइच्यारिकाश्चलणद नारकी

संमूर्छिमअनेजोतरश। तेउकायश्वाउकाय १० आठइनइयउभपदमतिपि निर्यंच १॥ लेस्या॥ कृष्णश नीलश्कापोतश॥ ३५ भवनपति१० व्यंतर१९ इग्यारदंडकनादेव ताअनइं।धरा। पृथिवी। नारकी।अनइं व नस्पती॥ एइ जाणनइ॥

विकलसमुहिदंसि दि आति उनरापलए उदप्रतिलेसया इय भवणवणपढमश्रानरिव

अ-कृष्ण१नील२कापोत३ कृष्ण१नील२कापोत३तेजश्पद्म५शुक्ल६ एछईलेस्यागर्भजमनुष्य। तिर्यंचपंचेंद्रीय तेजश्एच्यारि आदिनलेश्या ज्योतिषीनइलेश्या॥ तेऊपद्महनामइ ॥

पाछइजीया आउवनमरदेलेसपंदिं दिआ भवति [...]व्यंतरा [...]उजोयला तेऊ

एवानमाहरइद्वियइवसा॥ सौधर्मदेवलोकि।अनइंबीजइईशानिदेवलोक।एपाइंवि त्रीजइसनतकुमार।चउथ कइदेवलोकितेऊलेश्यापक कहइ॥ इमाहेंद्र।पांचमइ

नाभिणभवातदियभइवसी इद [...]उवलंतंगसमिसोहइस्याणी तियउंय

ब्रह्मदेवलोकित्रिणिपयोइ छठउलिवउदेवलोकश्चास्तंलातइ पांचमा अनुत्तर विमानलगइ ए सघलाइ देवलोकनइ पक्ष्म पद्मलेश्यापककहइ॥ कलेश्या। तेचित्तनउअध्यवसाय।मननउपरिणामविशेष।एतलइ ७ बारणुद्वार॥

नगरेसुरवणामुणी इकरिमसुरसरसुक्कलासाधरा [...]दियकवेत्तजाण चउ ३७

कायकहतांस्पर्शइंद्रियनइंजिह्वासहइंद्रियश्कहइ चउरिंद्रीयनइंनेत्रसहितइंद्रियध्कहइ थावरपंचकहतां एकेंद्रीकहइ॥ जिहांएकेंद्रियनइ तेंद्रियनइनासिकासहितइंद्रियश्कहइ बिंद्रियनइकानसहितइंद्रियपकहइ॥ विगलविकलेंद्री। वेंदायात्रि

थावरपणइंदिअकमणिद्वि नासिया चक्खु उसरिंदियाकमरवइंदिया थावर [...]

समुद्घात तेसमुद्र हीयइ ते आत्मा नाप्रदेस बाहिरा काढीयइ आकर्षी यइ तेसमुद्घातजा णवा॥

डिया चउरिंदिया पंचेंद्रि तिर्यंच मनुष्य देवता ए जाणवा पंचेंद्रिया एतलइ ५८ नारकी प्रमुखनइ वानकाय माहि समुद्घात विकलेंद्री कहियइ॥ द्वारकह्या॥ हिवे समुद्घातनउ अधिकार॥ क्रूरा वेदना १ कषाय २ मरण ३ वैक्रिय ४ आरि

गइ दो तिचउरिंदिय अमर नर तिरि मणुय सुरआणि पंचिंदि आ ३७ नारकी [illegible]

स भवनपति गर्भज तिर्यंच व्यंतर ज्योतिषीय वैमानिक दे ग्रैवेयक ए अनुत्तरय स्नकतन पृथिवी द गणा णी।
वेए पनइ पांच समुद्घात कह्या तेजस अधिक॥

सवणसुरा गइ तिरि थि नर लोइ कप्पसुसुर पंचग्रैवेयकापा सरासदया अणि
अग्नि वाउ वनस्पति विकलेंद्री असंज्ञि पंचेंद्रीय नरमनुष्यनइ ७ समुद्घात कह्या वेदना १ कषाय २ सात इ समुद्घात कार
दस माहि ३ समुद्घात वेदना १ कषाय २ मरण ३ मरण ३ वैक्रिय ४ आहारक ५ तेजस ६ केवल ७ पर्वा॥ णी क पनइ मनुष्य करइ

उणविकलसंमुछिपंचिंदिया २८ तिनि नरसमुद्घायकाणकरइ अनुक्रमि इ ए
पसर्व अनुक्रिमि इं जाणिवा॥ तीर्थंक सनियउ मनसहित॥ असंनियउ मनरहित नारकी १ भवनपती १० व्यंतर १ सर्वज्योतिषी १ सुरवेमा
२ गणधरकइ २ एहवउ पढ्न कहया॥ त॥ पवेकह द्वारसोलह मकमा हि होइ तेकेहा॥ निकाय मनुष्य १ तिर्यंच गर्भज एसघलोइ सोलन दं

अ सिक्ख णगणधर कर इ सनि असनि याउ हि बोलाया [illegible] देव सुर नरपति
नकी नइ संया अनइ थावर ५ विकलेंद्री ३ संमुर्छिम पंचेंद्रिय नरा अनइ तिर्यंच ए सर्व असंनीया जाणवा मनरहित जाणिया॥
असंनिया कह्या॥ १०॥ द्वारकह्या॥

रिगब्भया ४० थावरविकलसंमुछिमपंचिंदिया पअस नीजिय [illegible] गब्भि

१

= क्षितइ वेदाधिकार कहीयइ छइ वेद नउ अधिकार इ वैमानिक [illegible] वैमानिक [illegible] धर्म विकलं देवलोक वेद २ छइ पुरुषनो [illegible]
[illegible] नौ [illegible] वेद जाणिवउ = ॥

या वेदअधिकार सुरजणा वणजोसिय कप्पउ लिर छइ पुरुस [illegible] ४१
वेद पुरुषनो छइ सघलाइ सनत्कुमार देवलोक आदिदेइ निछउपर जा तिजि अनि तिर्यंच अरु मनुष्यनइ तिणउ वेद तानसुंदर ए अवरसर्व
नव ग्रैवेयक पंच अणुत्तर सर्वार्थ सिद्धि तांई पुरुषवेद पाईयइ = ॥ ताइ पुरुष वेद १ स्त्रीवेद २ नपुंसक वेद = नपुंसक वा

वेद [illegible] नरसमुह [illegible] गब्भतिरिमणुअ मिसिवेद तियहुंवा अव
रकी १ थावर ५ विकलेंद्री ३ संमुर्छिम मनुष्य तिर्यंच स्वइनो नपुंसक वेद कोस्य = म हृदियइ ए दुवीवो णि जिनवीतरागनी मदा ए तलइ ७१ इण परइ द्वार [illegible] दाल ४

सदिदं कयाकहि यउ नपुंसिया सहुदंजदवी ला णि जिननीसया ८२ दाल ४
हिव इपर्या जिनोद्वार १२ विचार कहीयइ छइ नारकीनइ पर्या सिद्धि आठेम आरेरे इदि यइ स्वासो सास साधारन तरुम को तिमां गइ ० करउछी कहीयइ
भासा पर्या सिप मनः पर्या सिद्ध सर्वसनकपतानादेवतानइ पर्या सिप ॥ अगलाकुरनइदं कक ए एदनया पर्याप्ति

द्विवपज्जति विचार [illegible] कि तिठ [illegible] कहीए [illegible] अविसु
कहीए कइ छाणी न का दिवीए मकलतडइ = पृथिवी १ पाणी २ अग्नि ३ वायु ४ वनस्पतीकाय ५ एइनइ पर्या सिवी तणगइ मारि २ मनना

दं लक्खिउ पायक [illegible] णीनहीए इहविक [illegible] णाविउ कायम [illegible]

८

वेंद्री तेंद्री। चउरिंद्री। असंज्ञीपंचेंद्री संमूर्छिम मनुष्य तिर्यंच ए इजे ते इनइं पर्याप्ति संसारियइ मत तक्रुण। गर्भज तिर्यंच। अनइं मनु

मिच्छदिट्ठी ए विगलिंदीसु दिट्ठि । तिण्णि दिट्ठि मतिति । य केलेस्तइ एवसंसारिवि । ए अर

ष्य अनइं जाणवा तेह पर्याप्ति इसरी कुणइ एतल इस घलाइ ॥ बुद्धि इ तेके ही । सम्यग्दृष्टि १ मिथ्यादृष्टि २ सम्यग्मिथ्यादृष्टि ३ ए३
दृष्टि कस्या। एतलइ २ द्वार हुया॥

गब्भय तिरिनराणि तसुद्दसणाणि । ए समुसअइ दंसकसुआए दृष्टि त्रिविध

भवन दैमानिकमांहि नारकीमांहि व्यंतरमांहि ज्योतिषीमांहि भवन गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय। अनइं मनुष्य पर्याप्ति
पतीमांहि दृष्टि ३ कुण॥ दृष्टि ३ सर्वि इं कहीते इं जकुण। विकलेंद्री २

विमाणिनारयवितरजोइससभवणएती कुआए गब्भयतिरिपंचिंदियमणुय इणिप

संमूर्छिम तिर्यंच मनुष्य जीवनइं दृष्टि २ कुइ। एइ वर्ग जाणवा। सम्यग्दृष्टि १ मिथ्यादृष्टि २ ए बे दृष्टि कुइ मिश्र दृष्टि ए जीव
नइं ब्रि दृष्टि कुण। थावरय तेइनइं मिथ्यादृष्टि कुइ। एतलइ ३ द्वार हुया॥

रि विकल ... लि तिरिंडियाए उदिष्ट दृष्टि एवि विग ... दि इंदियय ... दि

अनेक मिद्दर्शन कुइ। नारकीनइ। सभला इ देवतानइ। गर्भज तिर्यंचनइ। केवलदर्शननइ टाली [struck-through text]
चक्षुदर्शन १ अचक्षु ३ दर्शन ३ अवधिदर्शन ए ३ कुइ॥

डियाए ४४ अनुक्रम दंसणतिनिनारयसविसुर गब्भयतिरिविकलयल्लोए

थावर एकेंद्री तेंद्री। ए इनइं एक तेरस अचक्षुदर्शन कुइ। कर्म नइ योगि इय इवत्त मिल्यउ॥ संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्री अ

थावरे बितिइंदियएक तेअ असल कसि अकस्मि छाणए रिसिमिल्लउए मुछिम तिरिच उ

नइं चउरिंद्री ए एइ नइ दर्शन २ कुइ। चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन कुइ। चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ आरि दर्शन मनुष्य मांहि कुइ। तेके तो। चक्षुदर्शन १ अ
न २ एक सा॥

रिंदि दंसणक ... चरक अचरकपकदए चउदंसणपरमाहि चरक अचरक अ

चक्षु २ अवधिदर्शन ३ केवलदर्शन ४ इ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीया नारकी। व्यंतर। ज्योतिषी। भवनपती। वैमानिक देवता
ए च्यारि दर्शन॥ ४॥ तणानइ॥

उद्दीकेवलतितिलइएए गब्भतिरियपंचेंदि नारकवितरजोइससभवणवेमाणिया

नि त्रिण्णि ज्ञान अनइं त्रिणि अज्ञा देवता अनुत्तर विमानना ते त्रिण्णि ज्ञाननइ कुइ॥ बिहुं अज्ञाना विहुं ज्ञान। विक
न कुइ॥ । इन इके वल संपूर्ण॥

एए तिनाणअनाणतिदिवअणउ त्तरके वदतिं कविय तिनाणियाए उइ अनाणइ

लेंद्रीनइ। संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्री अनइं नरगनइ कुइ। एइ वर्ग सिद्धांमिइं थावरयनइ बिइ अज्ञाननइ कुइ। नरमनुष्यनइं
कहयउ तइ॥ - अज्ञान।

नाणदिकलसंमुछिमतिरियंपचिंदियअतिसएए थावरदोइ अनाणएयतिअना

मीचउनाणी ... केवलनाणी य इग नाणी इम बोलिय इ॥ चारि ज्ञानलगी संख्याथइ एक ज्ञानी बि अज्ञानी त्रिणि ज्ञानी च्यारि ज्ञानी॥

णियइ व नाणी २६ नइ सुणएय ४६ चउनाणी लमि संखव केवलनाणियइगनाणी इम बो

करियइ॥ स्यामात इस एक वचज्ञान नठेपमार हितठइ कलंक रहितठइ निर्मल ठइ अनंत ठइ केवलज्ञानी काययोग ११ पर्के मजिव॥

लीयइगा एगिदिय निकलंक पि विलं अएफ अरकदिनी जागनियइगा ४७ कायो

द्रियनइ कहइ। बेंद्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रिय तिर्यंच। संमूर्छिम पंचेंद्रिय नइ बेमि लइ ते केहा॥ काययोग १ वचनयोग २ काययोग १ वचनयोग २

योग एकिंदि बिति चउरिंदिय तिरियमणु छिम बेमिल्याए कायवयन तिसियोगतिरिन

मनोयोग ३ पत्रिणि योग कहइ के हन इ मनुष्य तिर्यंच गर्भज नइ। एवल इ १६ दिवचोर नय योग ३ बिवरइ कहियइ ... अनइ देवता नारकी नइ इम संसल्योग कहइ॥ कारइया। इनर मनुष्य कडुइ ... सइ ते कहा ... ज्ञान अन्या

रतिरि ... सुरनारय इमन सल्याए ४८ दाल ४ दिवइ बारइ उपयोग मरउनरलवि

नउदर्शन एवं १२। अवरबाजानइं यथाजोगइं थाय छइ॥ तइनी विगति ते कहियइ छइ। ४९ थावरयन इ त्रिय पत्रिणि नयो गकहइ ते केहा बिअज्ञा

योग अवरयथायो गिल छियइ तिद्दिनी विगतितकहियइ ४९ थावरपदकिति

नमतिअज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ वर्तीनइ। अव्यक्त दर्शन आएइ॥ दर्शन अचक्षु एक। पत्रिणि उपयोग पाचयरनइ कहइ ज्ञानबेम तिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अज्ञान बे। बिति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ अचक्षुदर्शन एक॥ एबिकोना बिअज्ञाना ... कअचक्षुदर्शन ए मय

लिदो अन्नाणियइति दंसण नाण अचरकएक अन्नाण अवरक ५१ ...

... नइ समान जाणी ... चउरिंद्रिय ... ज्ञान मति ज्ञान श्रुत ज्ञान ... अज्ञान मति अज्ञान श्रुत अज्ञान ... चक्षुदर्शन ... अचक्षुदर्शन स्पर्श। जिह्वा। नासिका॥ इम ... योग ... रिद्रियनइ कहइ

रिपं चिति इंद्रिय समसं च ... नाण अनाण चरक अचरक ५२ इम ... व

एम जाणउ। ए सत्य करसंजम नाथ नीवाणी॥ एइजइ ... उपयोग। संमूर्छिम तिर्यंच मनुष्य नइ कहइ॥ ए

उरिंद्रिनाणि ... ति करो ... जिन ... उवयोग मु छिम तिरिय उवयोग ५३ ...

नारकी गर्भज तिर्यंच ... चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ अवधिदर्शन ३ ए त्रिणि। मतिज्ञान १ श्रुतज्ञा न २ अवधिज्ञान ३ एवं ३ मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ विभंगज्ञान ३ एवं ९ अचक्षु मिश्र त्रिणि तेहमा एक वा॥ ... योग कहइ ते केहा ते कहइ छइ॥

रयगइयतिरिय सुरनवनमनि धरिय दंसण नाण अन्नाण अनुक्रमि तितितिसु वाधा

नवर्मै मति ... अवधि ... योगइ ... चक्षुदर्शन १ अवधिदर्शन २ एवं ज्ञान ३ ... मतिज्ञाना ... श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ... ३ चक्षु ... दर्शन ... अवधिदर्शन ... अज्ञान ... आरी कहियइ। 10

प्र नवरम ... नरदेव ... उपयोग ... नाण दंसण दे समणति ति धारी ...

सर्वादिक्षिणा आश्रित ५४ स्तानि ते जीव लि हा उपजइ चवणा ते कहियइ ति हीथकीच पामिला तवशी आगतितवि
जरहइ न द्वैप श्रधोर॥ विघनेते श्या न कमे त्रिवउ॥ नइयइ तेगति कहियइ कालि

सिहि आहारी ५४ उववति ठवण्णति वाण छहाकिदाग्गी चवण ऊस्यइतेगतिकदि

आगति तेस्या लिलात्तव शीआगलि इति इमय च्यारि द्वार हवा॥ ते हवी विगति विचारिवा॥ आयुरुपात
विआधीन इरहियइ॥ ५५

यइ आगति आवीयर दियइ इमरू आदमि विचारि ति दिनी विगति विचारि आगुस

इसु विइं कराकइइ पहार २४ घउवा सदंडक इक्रा॥ ५६ नारकी देवता सघलाइ विकलेंद्री ३ एस

आसुखि कहीयइ चउवीसदंडकि लहीयइ ५६ ठालइ नारकी देवता तिनि विक

वी। मनुष्य अनइ तिर्यंच मांहि आवी उपजइ॥ ए हवीक हतां नर।तिर्यंच पांच वा।नारकी।देवता।विकलेंद्री ३
एह त्रिणिनइ गति।२ आगति २ जाणिवी॥

लिंदिया मणुय तिरंचिमा दिंडकपदंडइ ए पदवी चवइ ति आगति पदंडइडइ एद

पृथिवी काया पाणी वनस्पती नइ चिहु जीव ३ विकेंद्र मांहि।मनुष्यनइ तिर्यंच च्यवनइ तिहां स्यइ गति २ आगति २
देवता सहित।मनुष्य तिर्यंच।देवता।पृथिवी।पाणी।वनस्पती मांहि आवइ॥ इसी परि जाणि

नइस पदंडइ ए पुढवीय आउवण उतपति इनि चवणति दसुरमिलाए गतिडइआ

१०

लि घा।तेउकाय वाउकाय मरी नर मांहि नावइ।बीजा मांहि आवइ॥ ५७ एहते वाउनइ रूप जिवनइ एक तिर्यं
चा॥

गइ ईणि परि इति लि तेउनइ वाउनइ थी नरटलउ ए ५७ एदउन पातवइ एक तिर्यं

चवनइ तिर्यंच।नरय विकिं मांहि तेइ आगति २२ विदंक दिवइ तिर्यंच संमूर्छिम नइ नय जिवनइ च्यारि मांहि निरय
वाउ आवइ।गतिति र्यंचना॥ हाते॥ नर।तिर्यंच।देवता मांहि।गति।पण नरकी तिर्यंच।मनु

डलि चवण स्वगा ति कहीए इनि आगति दिवइ तिरियमणुमिन चारि उतपात थार

था।देवतानां मनुष्य गर्भज नइ चवइ नर मनुष्य।तिर्यंच गर्भजनइ आवइ।आगति जाणिवी। नरनइ अवक्रि
जा लिवा॥ गर्भज तिर्यंच नइ उपपात ४ नरक तिर्यंच।मनुष्य।देवतानां चवनइ पद जागति पद जाणि नवं च्यारि
गति ४ उपज ४ ... ति वा॥

इगतीए चवण उच्च आगति इनि तिरिगभ्यय उपत चवणागति आगतीए चउचउस

हिनर तिर्यंच।नार तिर्यंच।नारकी।वच नपणा च्यारि गति सं वे सिद्धिसउं पांचमी गति इम पांच आगति
धि गति पसिद्धि गति सिद्धि हिता पांच इगति जा लिवी॥ ५८

णिनर उवपति आरि चवण गुण आरि पवइगानीए ५८ सिद्धिसउं पंचमी गति इमपंच

सिद्धि विना।दिवं उरदेवता न वकदियइ ओछइ मी आगमि भा सि कोइ तिरीय कल्प देवलोक अनइ आठमा दे
वर्ष॥ आगति मा हि॥ आठमा ल गीतिर्यंच जाइ। वलोकि लगा ना

आगति व्यारि दि मनुष्य उवएउ ओ आठइ आगमि जोइ विशेषक ल्प आठमलगीत

11

आ व्यातिर्यथमांहि एरह्यीकपरिग्रकम उत्कृष्ट जइ।गति।नारनी आगति।एलास्वप्तनीआ धनधमसीसिंहांनति
उन कृपजइ॥ घइ॥
रिसाणउ पढमीऊपल्लइ उक्कस्लपाल ठ्वणनर एक्का ति आगतीए धनमलसव्व
जे उवनमांहि विध्यातवदीनञ्जेत मांललतामनमांहिरतिसातां मरकिजघन्यआउघ३१० रसस हस्त्रवरस
कहइ तली - १ ।१०।२० । २१ २२। ५६ जाणिवउ॥
मविडाणा दिध्यातजैदसुणताजै इ ।निरतीए ५७ नरकऊघन्यदसमदसवरस
उत्कृष्ट उसागरोपम३३ आउघइ नरकि सवनपतिनउ जघन्यआउघ उनरकसरीखवरस सहस्र१०
गति इं जाणिवउ॥
उ सागरा ईस तिज्ञ आगलाए आउ उक्कोस एवदन ऊघन्पनरयसमस्वव्यानीआ
लवनपतिनउ सागरोपम१ जाके पतला इ इगपरहंउ कधाया॥ इ ग्यीनउ आउघउवरसस हस्त्र२२ अपका
रनउ कृष्ट उआउघउ॥ उकृष्ट उ॥ यनउ आ
ऽ ग्गु विकसागरवपदरम उवनइगरहंलकघया एपुढवीएवरसमस्सवावीस आस्सग
घउ७ सहस्त्रवरस उत्कृ तेउकायनउआउघउउत्कृष्ट उदिन३ वरससहस्र३ वनस्पतीनउवरससहस्र१० आ
ष्ट उ॥ नउ आयु वाउकायनउ उत्कृष्ट उ॥ उ३ कृष्ट उ॥ जिनवीतराग इंतथउ॥
सहस्सवासाउ आए ३७ त्तउदिणतिन्नि तिन्निसहस्सवासाउवाउ वणासइस दससहिस्सपाउआर

११

बेइंद्रीनउवरस१२ आ तेइंद्रीनउ वास दिवस तेइंदियनउ आउ घउनउ कृष्ट उ॥ चउरिंदियनउ आउघउ मास छ कृष्ट उ॥
नउ कृष्ट उ॥
बारबेइंदियवरसाउ एवास द्विवसतेरिंदियउदिंगिणपाए उदयचउरिंदियमासप
तिर्यंच सम्मूर्छिमपंचेंद्रीनउ दिवकहियइ जलचर।थलचर।खेचर।उरपरिसर्प।भुजपरिसर्पपंचइसंयग्रो
नइ।। नेहनाविगति॥
रमाउ तिरिएसमुच्छिमदिवक इप्पाए जलचरखह्वरउरपरिसप्पभुजपरिसप्पपवयप
जलचरनउउत्कृष्ट उ पूर्वकोडि आयुमनकनयादिकथलच खेचरउवरससहस्स७२। थलचर।उरपरि भुजपरिसर्प रवपरिसर्पनउ
रनउ आ उघउ कृष्ट उ वरससहस्स८४ हताहिक। पंनउआउघउ उत्कृष्ट वरससहस्सपउपरि नउलउगउ
दसंए ३८ एरवकोडि इकसदसचउरासियं वदतिरितिपनवरसाउआए अधिकावि
नउ आउघउ कृष्ट उ थरस सम्मूर्छिमपंचेंद्री आउ घउ गर्भजपंचेंद्रीनउ आउघउ कहीइ जलचरनउ उरपरि
सहस्र ५२ कहइ॥ कहइ॥ इ॥ सर्पनउ भुजपरि
ऊंकडीसदस्सचालीस अनुक्रमिपंचिदआउयाए गब्भजपंचिंदइपुन्नो आउजलयर
सर्पनउ उत्कृष्ट उ पूर्वकोडि थलचरनउ।गाइ भइस घनउआउघउ उत्कृष्ट उ पल्योपम।खेचरपंखीयानउकाल असंख्यातमउ भाग आउ
नउ जाणिवउ॥ थउउकृष्ट उ पल्योपमनउ असंख्यातमउ भाग ईहांकोडि कोटनउ जाणिवउ॥ ६२
उरसपउविकोडि धलयर तिपलिय खचर असंखभाग पलिउवमनउ दियसकोडि ४२

12

नरयाणि तिरि आउ उक्कोस पुढवियमुदं नवतसावर जहन्नस दिक्कं तहरा दस

क्लेक सते सेसे तिरिय पणगए वंतरसद जस्सइस धणं लियउहो अइ डीिायम

ए डोइमी उक्कन पलिय अठमउला आसकोसमतिआ ठिइय वइसंख आदेगलेोप

कप्पतिब सम्मारह कप्प ठिइम निसरउं ए दिलइ कप्पइं ए ठिइउत्तद पडइसाग

रउवरउं ए वीडइ विकप्पठिइपलिय कोकोरउ उक्कडनदोइ अयरसाओरसाए इमति

12

कारिइं जिनवीणाइं। अद्दोनि र्मलपाणीश्रीरयरमलकमंसंबधीया॥ जीजदसनतकुमारदेवलोकिजघन्यआउ षटदेवनाद्सागरोपमथविचारस॥

लदाणिय निम्मलपाणिय सोई अमलकमलं कोरनाए। सहसार आओहि अयर वि

उक्कृष्टत्रीजइदेवलोकिइंसागरोपम७आउषउ देवनउ॥ अधिकाकाईं सागरोपमजघन्य। सागरोपम७काकेरां उक्कृ

रु ठियमा उक्कोसत्ता ठियइए सादिसमायस्स लंतए ठिइ इए समसायरसाठि

ष्टउबठिइ। पचमब्रह्मदेवलोकिनउआउष ठिंयाचमर्यादलिंदेवलोकिआउष जघन्यउसात७सागरोपम।उक्कृष्टउसागर

चउदस ठिइए चउद्दकप्पइ आउए दिलए च मिक ठिवावासाउए उघन्नसातयुस

दलसवणउए बठ इदसच उदससठिइगिणउए इइ सत्तमिवउदसतरसर एकेक

इं अधिकउइइ अवर उउक्कृष्ठउदेविलउए तेऊघन्याणियठकप्पिलइए इकइ

ईमकारतां गिलियइतांलगी। आवइनवमग्रैवेयकजांलगी। जघन्यआवखउं सागरोपम३०कहइ॥

मकारतां गिणितां लगीए आवइ नवग्रैविज्जकजां लगीए ३एक्कमइसागराइ कवेत्रीसए व

३कइ३गिलियइसागरोपम३१एकत्रास। तेआनवमत्रकइ३नवमइत्रै तेआरिअनुत्तरविमांनिजघन्यआउ

नेकिइ॥ बत्रीसजाणियउ॥

तेत्रास गिणिइकत्रीसए ३० केतुइ नवग्रैवेयकाए विजांइ सम आणइ३२एकए

३कइ३३सागरोपम३३च्या। सर्वार्थसिद्धिवाचमइअनुत्तरवि इहांपांचमइअनुत्तरविमानजघन्य अवतारजीन

रिअनुत्तरविमाननइविषइ। मांनिसागरोपम३३जाकइ॥ २७ आउतेनथी॥

अजन्येतेत्रीसए सरवासिद्धितेत्रीस ए १ इसइ वउधन्यकाउडियइनदीएअवतरएक

तिहांमीलहिय शिवपदं पामइ। मंइयणा तत्रपांमइयरमआणंद समोहियामरत्तविजाइअस चउवीसइं

इ॥ रहीन॥ यतल इवरश्यया। १० मोहियामरत्तविजाइ॥

इससीलकरि शिवपदशाइ अमंदएंतउपेत परमाणंदए ३८ समोहियअसमोहियमरणा चउवीसइ १ १३

इंडकिइंजालिया। परतविनइं विषइजाइ समकालिंइंएकइंवारइंमत्र मारणिइंलेईनइ। एकइस समोहियउक

जिवारइ॥ देसलेइनइ। मइ॥

देनकवोहियाए परतविजाइजिवारए समकालघरेसतिवारए मामइलेई इणमरणसमोहिय कहियइ

हियइतेणइस श्रेणिमांहि श्रेणिकरी अत्रकमिइश तेहनइअसमोहियामरणजनीलीयइ। यतलइश्वइरकूया॥

मइ॥ लियइअदेसलेईमरिसविज्ञाइ॥

तिणिसमइए श्रेणिमंकिमिरलियइए असमोहियअडवोलियइए ३२ ढालउ

पंचवीसमउत्रांणं१०संवधिचार। हिवंतेहनउअधिकारसंबंधलाइलेच एकेंद्रीप्रथिवीआदिनइआगम रोयूकायुम

नां॥ इंद्रियकायस्थितिसासमइआउष

पंचवीसमउपाणइवारे हिवतद्दतणाउअधिकार एकंद्रीआणविचारंरे तेह्यगमा

विचारियइ। वेंद्रीनइपालइइंद्रियवचनबोलअधिकतेंद्री चउरिंद्रीयननइंप्राणाअवनेत्रअधिक। संजिमित

नइंपांणाजाविकानतबलअधिक॥

कुगताविचार ३३ हिविइद्रीयप्राणसमश्रे आचारंअठ तिबुनसंसनिमतिरियप

र्यंचपंचिंद्रीनइप्राणा९कस्या। तेगनामइं नवमतेंअव ३४ तिर्यंचनारीजयंचेंद्रीअनइंनरमनुष्यसुर पसर्वेनइप्राण१०म

तोडिचवाधान॥ देवता॥ नसहि॥

णिद्रिश्रे नवआणसाणा हिणिहिंइं ३४ तिरिगसयनसुरमणदयोरे २०ढंग अप्रा

तत्तथ्याकस्या। यतल दिवंक हियइहइयागर पतेहनाविगति नारकीनइच्योगरमननायवचननाथवैक्रीय वंतर।

इआंण्वारश्वपवासमर्ते याव९वैक्रीयमिश्रकायाथ१०कार्मणयोग११

पादसमाणिया ३५ हिवकंहियइपनरइयोगरे नारकियइ ११ समसयोग ३५ वाणा <u>14</u>

तवनपति। विमानिक ज्योति षी॥ एह देवतानइ। नारकीनी परिइं योग ११ त्रिणि। त्रिणि योग। इग्यारी। इग्यारी। तिर्य काय नइ। उदारिक काय योग २ उदारिक मि श्रकाय योग २ कार्मण योग ३। वाउकाय योगपर्याप्त वाउ वैक्रिय काय योग

ग्याविमाणि जोइसिए नारकीव सपाणाविरो [illegible] तिलियोग पुढविट [illegible] तेलरे [illegible] काय

वैक्रियमिश्रकाय। एवतीनीपरिइं वनस्पतीकायनइ एकयोग त्रीविगलिंदिकनमयोगनाउ योगएकइं। बेइंद्री। तेइंद्री। चउरिंद्री। अधिक वर्णमलप योग २ तेकन: विइंकरया॥ तिर्यंच मनुष्यनइ चिहुंगतिनइ संज्ञीमतिर्यंचपंचेंद्रीनइ तेरह योग

बइ [illegible] दुइरी [illegible] वनसपरी [illegible] पंव [illegible] योग बहु विगली [illegible] तिचरिंदी

हारवचनयोग ३ उदारककाययोग २ आहारककाययोग २ आहारकमिश्रकाय योग २ [illegible] निरहित। तेरयोग जिनिश्चनइ कह्याछइ। नरमनुष्यनइ दइ तेकिइं योग पंचा ला तेकइ॥ सत्यमनोयोग १ असत्यमनो योग २। उदारिक मिश्रकाय योग २ कार्मणकाय योग ४५ चा रि॥

रे सभुविमिति [illegible] आहारकमिश्र विरहियरे तेरगइति स्थिनइ कहिया नरवे

व्यवहारमोयोग ४ सत्यवचनयोग ५ असत्यवचनयोग ६ मिश्रवचनयोग ७ व्यवहारवचनयोग ८ सर्वार्थसिद्धि पांचमइ अनोत्तरवि उदारिककाययोग ९ उदारिकमिश्रकाययोग १० वैक्रियकाययोग ११ वैक्रियमिश्रकाययोग १२ मानिए जीवनथीयहतर॥ आहारककाययोग १३ आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाय योग १५ [illegible]

नकिपनरस [illegible] मिलिको इयतोल्याई ३८ सरवारथसिद्धनक्कतो ए

सुरदेवतानेपणइ। आरिगतिनर। केतिर्यंच मनुष्य। देवता वणइ संपजइ जीव॥ इम एकइं प्रकारिइं संसारमांहि लमीलमी नरयजीव लागत्रा कसतेसयत्रा॥ जिनवालरागश्रीमहावीरतीर्थंकर चरणे लगिहिंलागतउकं॥

सुरगणइ चउरगतिसम [illegible] इमसमीभमना तविसागोरे जिण [illegible] रिचरणे [illegible]

+योगकेहनइं नथीकह्याकर्मइंत्॥

प्रत्थ सांभळोम्हाराचचन [illegible] मनीसनकरीजाणजो॥ माचउदर्शनसमकितएणइं प्रकारिइं सिद्ध मनिमांहिथ्याणजो॥ सर्वाप्पणविशेष। जेपर उचारित्र [illegible]

१३ प्रस्ववयणाढ़ तिकरसाणपउर ससद्दंसणइमपनि आयाउ पणि [illegible]

तसर्वतं वयपच निर्मिकरी नवतत्वनइं विषइं विषइ सुमि वचनथीटलतउ॥ उसद्वजीवघरउंचारित्रपाल मइ॥ तेसघलाकर्मनीसयथानीन तउनम॥

[illegible] तिगिल [illegible] सिमिवं नटस [illegible] १० केरर [illegible] सयगयाजीरे सविकर्मिता [illegible]

व्याग्रिसिद्धपरमनंरूपठावपाम्यत। तेसिद्धनइं नमस्कारकरउं मस्तकि नामीनइं॥ जेसिद्धनइं नथीशरीर नउबिचपणउ॥

करनी बयासिद्धपरमपदपामी रे तेसिद्धनमरुं शिरनामी ८१ [illegible] नदीय सरीरथपंत

एकवनमांहि संदेहनआणिवउ। तेसिद्धनीअवगाहनाशरीरमांनहीवाउउंउ नेउ। एजघन्यपणइगणिधिवउ। बिरद्दीयकरी रनोअवकारइं॥

१ [illegible] अवगाहनक [illegible] सिद्दायवरे [illegible] दिपायो

धतुखसयरअनतइकपरि [illegible] तीरशरीरमांनपसंसारनथीयक। जिनकातरामनउनमयइगणकरियइ अवसार्शत्री जवतामउंगणउमास॥

८२ धतुविसय तेचासफ्रेरारे उक्कुहाबह [illegible] नकारेर इवगादृशि [illegible] संसारि

१५ 15

प्रस्णकरीनेसंसारथीतारइ। जीवनइसंसारथी॥ ते सिद्धनइंसंघयणादिदेईनइदससढार तेहनत्रपरिहारकरिवन्न

हार जिननामप्रदितेतमनइं गउ० उपलउ संघयणादिकदसथूढार तेहतणाउबीध

सिद्धिमाहि नलासइ॥ सम्यक्तसात्वीद्रष्टिपकेनिर्मलदीपती मिथ्यात्व छि तुझी ति हा॥ तेहवासनतीकांति।जे एवादीवानीकला॥छि स्वातिदवत्र निर्मल॥ केवलसंसर्गा।दर्शनिश्च नइंकेवल

उपरिहार सम्यक्तिमनहझिएकनिर्मला रतनदो तिदीपकनीकला ८४ केवलदस

ज्ञान।पवित्रनिर्मल लासइ॥ (जे)तेयइत्तस्य सामान्यत्रिविधभुवनमांहिलीं॥ सूर्य॥ नथीजिहांअज्ञान।अनइं योगममत्व चनाकायाना॥ तिहांतेपक्तनासविक

णकेवलनाण जाणिकिरूपढ त्रिभुवन साण नहीं अनाणयोगएवित तिहांपक्तास

मेखपावीनइ॥ बारत्रयोगमाहिनपयोगरूढइ। तेकेहा।केवलज्ञानकेवलदर्शन बाजारथीनत्रनदोयोग॥ तेइनीआदिइंआहा

निकर्मबिप खि ८५ बारमाहिदेईनप्रयोगकेवलनाणदंसणाकदोय इंदनीआदि

रनि होआषार. हाजइ॥ तिसिद्धनइंद्वार१२नउकहकहिवा नवासइ॥ आणतिसमउवनइआव्यप्रकु रवाजानावइ॥ तिहांमउव्यपदा।तिहुवनन उत्तमापाइ।केवलज्ञा

कहोआहारेनिद्धहत्ववनीवदहडबार ८६ अणातिएकसमउसहवाणीतिहिंआवइसिद्ध

वनसवणी वाणयोग–

१५

नरईश्वरनइंश्रावइ॥ प्री।ए१० योग१५एवेवइनथीजेसिद्धनइं॥ ८७ सिद्धिरवनांमराजानइमल्हारवंत्र॥ त्रिसलामाणीमानामइ सिद्धिस्थानकनीगतिसवीकहीबइनिरुपम॥

एइनही सिद्धिगतिएविकहीं ८७ सिद्धारथनरनाहमल्हार त्रिसलाराणीव

कहियेवआव तारजनम॥ बारश्ईमानजिनेंद्रसकलकर्म ममा। कीकरा॥ स्वामीगकरइपरवीअनोपमगति श्रमी कारका छी॥ ८८ सिद्धपदिस्थानकनमस्कार नमहुंलमवंतनइ॥

निअवतारवीरजिणंदकर्मक्षयकर स्वामीएहवीगतिआदरी ८८ सिद्धपदस्थनमवं

जिहांजरा नथी। जिहांमर णनथी। कलंकर हीत। अंतनथीजेहनउ। अंगीनइंद्रियानइंविषइपरम आणंद॥ इमकहइसूरिशिष्यरा।श्वर

तजावंत अजरअमरअकलंकअनंत अणीइंद्रियआइपरमाणंद इमसमणइसूरि

आण्यासंदरनामासदगुरु॥ सद्गुरुश्रीसाधुरत्नइंधवनिइंकरीश्री प्रवचनसिद्धांतसांभली॥ पचवीसइदंडकस संसेपसंपकपकइंडक सिद्धनमराड॥ प्रतिइं॥

आणसुंदर ८९ इम गुरुवचनइं अवधारुणी पदमकवत्रवीसमेपकेक

नीत्मावइकस्याबदुवारववीसा नेइनवीसदंडकिइवंस्पइअनंता ९० हिवैमागोस्वाइपसाउसो जिमएचवीसम कारा॥ मझ छि॥ इदंउकिपा

अतिबोध्याबारववीस ९० निदइंरांसमसअनंतलव हिवतो मिइपसाउ जिमव

16

मियइ॥ जहीयइ अवचलनिश्चल स्तोत्रक। तेयंच वासमनदेकसिद्ध दफिकांमारिकस्यन्नइसिद्धनवा। मसल

मकपंदमीसमइ जहीयइ अवचलभाउ ॥१॥ इति श्रीचतुर्विंशति दंडक स्तवक

इ २१ द्वार सहित वर्द्धमांन स्वांमी नउ स्तवन संपूर्ण॥ कर्त्ता श्री राजेंद्र सूरि शिष्य धी साह जिहांनाबाद मध्ये

लिखितं

रवन्दिशातिहारगर्जितं वीरस्तवनं संवत १७२४ चैत्र सुदि दशम्यां तिथौ शनिवारे॥

१६